विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग-सप्तम्

विषय-हिन्दी

।। अध्ययन सामग्री ।।

जमानत

-सरताज बानो

महामंत्री : पहली शर्त है कि (रूककर) युद्ध में हुई अँग्रेजी सेना की आर्थिक क्षतिपूर्ति के फलस्वरूप आप हमें तीन करोड़ तीस लाख की राशि एकमुश्त अदा करें।

टीपू : ओह!

महामंत्री : दूसरी शर्त यह है कि आपको लिखित रूप में वचन देना होगा कि आप भविष्य में अँग्रेजों के विरुद्ध सिर नहीं उठाएँगे।

टीपू : (ठंडी साँस भरकर) ..... और तीसरी शर्त?

महामंत्री : तीसरी शर्त यह है कि ..... (पुनः रुक जाते हैं)

टीपू : पढ़िए महामंत्री..... हम किसी भी स्थिति के लिए तैयार हैं।

महामंत्री : मेरी जुबान मेरा साथ देने से इनकार कर रही है हुजूर..... तीसरी शर्त यह है कि..... (पढ़ते हैं) आपको अपने दो शाहजादे अँग्रेजों के पास जमानत के तौर पर रखने होंगे।

टीपू : ओह नहीं!! (मुट्ठियाँ भींचकर खड़े हो जाते हैं) हम हार गये हैं, इसका यह मतलब नहीं है कि हमने हिम्मत भी हार दी है। आखिरकार इस शर्त का क्या मतलब है?

महामंत्री : हुजूर..... लिखा है कि जब तक आप अँग्रेजों के खिलाफ तलवार नहीं उठाएँगे तब तक आपके शाहजादे भी सुरक्षित रहेंगे.....
परंतु.....

टीपू : परंतु क्या..... जब हम लिखकर दे रहे हैं कि हम अँग्रेजों के खिलाफ नहीं जाएँगे तब जमानत का क्या औचित्य है? (व्याकुलता से टहलते हैं) यह नहीं हो सकता..... कभी नहीं हो सकता।

महामंत्री : मुझे नाचीज की राय में जल्दबाजी में कोई फैसला न करें। जनरल कार्नवालिस ने तुरंत ही शर्तें पूरी करने के लिए नहीं लिखा है। हमें सोचने के लिए मुहलत दे रहे हैं वे।

टीपू : (महामंत्री का संकेत समझकर) हाँ। हमें सोंचने के लिए समय चाहिए। तब तक जनरल के दूत को अतिथि-गृह में ठहराने की व्यवस्था कर दें।

(महामंत्री सेवक को बुलाकर दूत को उसके साथ भेजते हैं)

टीपू : (भाव-विह्वल होकर) महामंत्री! क्या आप यह सोच सकते हैं कि हम अपने शहजादों को अपने से दूर कर देंगे? वे हमारी जान हैं। हमारी जिंदगी हैं। हम उनका मुख देखकर जीते हैं।

महामंत्री : मैं समझता हूँ हुजूर। औलाद किसे प्यारी नहीं होती? फिर आप शाहजादों के पालन-पोषण पर विशेष ध्यान दे रहे हैं।

टीपू : (उत्साह से) हाँ। हम उन्हें अपनी शक्ति का आधार मानकर चल रहे हैं। अपने राज्य की डूबती हुई नैया का खेवनहार मानकर चल रहे हैं।

महामंत्री : आपका सोचना दुरुस्त है हुजूर!

टीपू : हम सोचते हैं, हम अपने वतन को बचाने में कामयाब नहीं हो सके तो क्या हुआ? हमारे शाहजादे अँग्रेजों से इसे वापस लेंगे। वतन को आजाद करायेंगे।